साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 26, दिसम्बर(प्रथम), 2017

संदीप की याद मे

हर सच को सूली चढ़ते देखा
हर झूठ को फूलते फलते देखा
कलयुग का है प्रताप यही
अच्छाई को घुट घुट मरते देखा
सुकरात ने कब देखी बहारें
फूल किसने ईसा पर वारे
साफ साफ कह कर दिल की
हो गए थे जग से न्यारे
क्या क्या न सहा उन लोगो ने
जिन्होंने बाँटा प्यार सभी को ।
हर पत्थर हर फूल हर शीशे को
दिल से छू कर देखा तुमने
महसूस कर उनकी धड़कन को
शब्दों में उतारा तुमने बेटे ,
राहों में बैठे , घरों में सिसकते ,
ठोकर खा - खा पलते
बचपन को भी निहारा तुमने ,
लूले , लंगड़े अपाहिज को भी ,
बड़े प्यार से दुलारा तुमने ।
लेकिन मिला क्या ?
आरोपों का गट्ठर !
फाँसी का फँदा !
ले गये पापी जान तुम्हारी
तेरे सहारे जो जीती थी,
पैबंद अपने सपनों में टाँगे ,
तेरे मखमली सपनों को
रेशम से सिलती थी ।
पर जालिमों ने कुछ न छोड़ा
आग लगा भस्मासुरों ने
उस माँ की दुनिया उजाड़ी
बच्चे मेरे गिला 'न करना .
'सत्यमेव जयते 'तो
मात्र शब्दों में कैद,
सच्चाई निर्धन की
हर युग में हारी ..हर युग में हारी ।